श्री शनि चालीसा

दो.- जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज॥

जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथे रतन मुकुट छवि छाजै॥

परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥

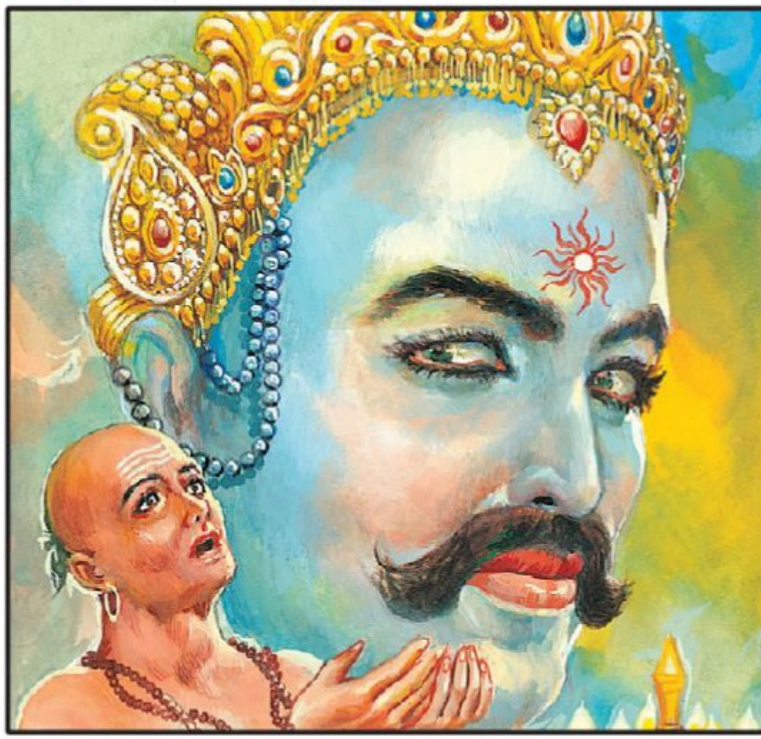

कुण्डल श्रवण चमाचम चमके।
हिये माल मुक्तन मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा॥

पिंगल कृष्णो छायानन्दन।
यम कोणस्थ रौद्र दुख भंजन॥

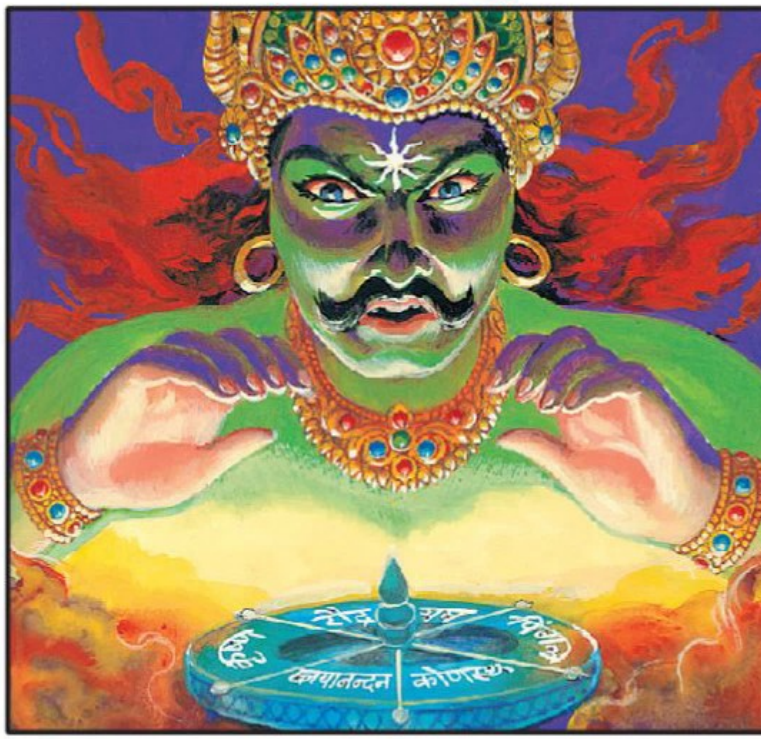

सौरी मंद शनी दश नामा।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जा पर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं।
रंकहुं राव करैं क्षण माहीं॥

पर्वतहू तृण होइ निहारत।
तृणहू को पर्वत करि डारत॥

राज मिलत बन रामहिं दीन्हो।
कैकेई की मति हरि लीन्हो॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई॥

लखनहिं शक्ति विकल करि डारा।
मचि गा दल में हाहाकारा॥

रावण की गति मति बौराई।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंग बीर की डंका॥

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा॥

हार नौलखा लाग्यो चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो॥

विनय राग दीपक महं कीन्हो।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो॥

हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी मीन कूद गइ पानी॥

श्री संकरहिं गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई॥

तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रौपदी होति उघारी॥

कौरव के भी गति मति मार्‍यो।
युद्ध महाभारत करि डार्‍यो॥

रवि कहं मुख महं धरि तत्काला।
लेकर कूदि पर्‍यो पाताला॥
शेष देव लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई॥

वाहन प्रभु के सात सुजाना।
हय दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना॥

जम्बुक सिंह आदि नग धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पति उपजावैं॥

गर्दभ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्ध कर राज समाजा॥

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी॥

तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा॥

लौह चरण पर जब प्रभु आवैं।
धन जन सम्पति नष्ट करावैं॥
समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी॥

जो यह शनी चरित नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥

अद्भुत नाथ दिखावैं लीला।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥

पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत॥

कहत रामसुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकासा॥

पाठ शनिश्चर देव को, कियो भक्त तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥

शनि चालीसा

दो.-श्री शनिश्चर देवजी, सुनहु श्रवण मम टेर।
कोटि विघ्ननाशक प्रभो, करो न मम हित बेर॥

सो.-तव अस्तुति हे नाथ जोरि जुगल कर करत हौं।
करिए मोहिं सनाथ, विघ्नहरन हे रविसुवन॥

चौ.-शनिदेव मैं सुमिरौं तोही।
विद्या बुद्धि ज्ञान दो मोहीं॥
तुम्हरो नाम अनेक बखानौं।
क्षुद्रबुद्धि मैं जो कछु जानौं॥
अन्तक, कोण औ' रौद्र मनाऊं।
कृष्ण बभ्रु शनि सबहिं सुनाऊं॥
पिंगल मन्द सौरि सुख दाता।
हित अनहित सब जग के ज्ञाता॥
नित्य जपै जो नाम तुम्हारा।
करहु व्याधि दुःख से निस्तारा॥

राशि विषम बास असुरन सुरनर।
पन्नग शेष सहित विद्याधर॥
राजा रंक रंहहिं जो नीको।
पशु पक्षी वनचर सबही को॥
कानन किला शिविर सेनाकर।
नाश करत सब ग्राम्य नगर भर॥
डालत विघ्न सबहि के सुख में।
व्याकुल होहिं पड़ें सब दुख में॥
नाथ विनय तुमसे यह मेरी।
करिय न मोहि पर दया घनेरी॥
ममहित विषम राशि महं बासा।
करिय न नाथ यही मन आशा॥
जो गुड़ उड़द दे वार शनीचर।
तिल जव लोह अन्नधन बस्तर॥

दान दिये से होय सुखारी।
सोइ शनि सुन यह विनय हमारी॥
नाथ दया तुम मोपर कीजै।
कोटिक विघ्न क्षणिक महं छीजै॥
वंदत नाथ जुगल कर जोरी।
सुनहु दया कर विनती मोरी॥
कबहुंक तीरथ राज प्रयागा।
सरयू तीर सहित अनुरागा॥
कबहुं सरस्वती शुद्ध नार महं।
या कहुं गिरी खोह कंदर महं॥
ध्यान धरत हैं जो जोगी जनि।
ताहि ध्यान महं सूक्ष्म होहिं शनि॥
है अगम्य क्या करूं बड़ाई।
करत प्रणाम चरण शिर नाई॥

जो विदेश से वार शनीचर।
मुड़कर आवेगा निज घर पर॥
रहें सुखी शनिदेव दुहाई।
रक्षा रविसुत रखैं बनाई॥
जो विदेश जावें शनिवारा।
गृह आवै नहिं सहै दुखारा॥
संकट देंय शनीचर ताही।
जेते दुखी होइ मन माही॥
सोई रवि नन्दन कर जोरी।
वन्दन करत मूढ़ मति थोरी॥
ब्रह्मा जगत बनावन हारा।
विष्णु सबहिं नित देत अहारा॥
हैं त्रिशूलधारी त्रिपुरारी।
विभू देव मूरति एक वारी॥

इक होइ धारण करत शनी नित।
वंदत सोई शनि को दमन चित॥
जो नर पाठ करै मन चित से।
सो नर छूटै व्यथा अमित से॥
हौं सुपुत्र धन-सन्तति बाढ़े।
कलिकाल कर जोड़े ठाढ़े॥
पशु कुटुम्ब बांधव आदी से।
भरो भवन रहिहैं नित सबसे॥
नाना भांति भोग सुख सारा।
अन्त समय तजकर संसारा॥
पावैं मुक्ति अमर पद भाई।
जो नित शनि सम ध्यान लगाई॥
पढ़ै प्रात जो नाम शनी दस।
रहें शनिश्चर नित उसके बस॥

पीड़ा शनि की कबहुं न होई।
नित उठ ध्यान धरैं जो कोई॥
जो यह पाठ करैं चालीसा।
होय सुखी साखी जगदीशा॥
चालिस दिन नित पढ़ै सबेरे।
पातक नाशै शनी घनेरे॥
रवि नन्दन की अस प्रभुताई।
जात मोहतम नाशै काई॥
याको पाठ करै जो कोई।
सुख सम्पति की कमी न होई॥
निशिदिन ध्यान धरै मनमाहीं।
आधिव्याधि ढिंग आवै नाहीं॥

दो.- पाठ शनीचर देव को, कीन्हों 'विमल' तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥
जो अस्तुति दशरथ कियो, सम्मुख शनी निहार।
सरस सुभाषा में वही, ललिता लिखैं सुधार॥